

नीतिशास्त्र : एक परिचय (Ethics : An Introduction)

भूमिका

नीतिशास्त्र और मानव के बीच क्या संबंध है? इस संबंध की आवश्यकता क्या है? सबसे पहले इन दो मूलभूत प्रश्नों का समाधान होना चाहिए। परंतु इन प्रश्नों को समझने से पहले हमें कुछ अन्य प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करना होगा जैसे-नीतिशास्त्र क्या होता है? इसकी उपादेयता क्या है? मानव जीवन में इसकी भूमिका क्या है? मानव क्या है? मानव का जैविक पक्ष क्या उसके पूरे जीवन को चलाने के लिए पर्याप्त है? क्या मानव बिना समाज, राज्य, विवाह, परिवार जैसी संस्थाओं के बना रह सकता है? मानव के जीवन का लक्ष्य क्या है? आदि।

वर्तमान में मानव से संबंधित कुछ अनसुलझे प्रश्न हैं, जिनमें 'मानव क्या है?' यक्ष प्रश्न है। इस प्रश्न के कई उत्तर हो सकते हैं, जैसे-

1. मानव एक पशु है क्योंकि पशुओं के समान ही इसमें मूलभूत प्रवृत्तियां (भय, भूख, काम आदि) पायी जाती है।
2. मानव की दूसरी व्याख्या एक बौद्धिक प्राणी के रूप में की जा सकती है। जिसके अनुसार मनुष्य पशु नहीं है क्योंकि उसके पास एक ऐसी विशिष्ट क्षमता है जिससे वह चीजों की व्याख्या कर सकता है और इस रूप में वह विवेकशील प्राणी है।

3. इसी प्रकार मनुष्य की एक अवधारणा के अनुसार मनुष्य एक मनोवैज्ञानिक प्राणी है जिसमें प्रेम, करुणा, ईमानदारी जैसे मूल्य और संवेग विद्यमान है जो उसे जीवन और जगत के अन्य प्राणियों से अलग करते हैं।
4. एक अन्य व्याख्या के अनुसार मनुष्य मूलतः सामाजिक संस्थाओं और सामाजिक मूल्यों के बिना सुचारू रूप से अपना जीवन नहीं जी सकता। इस रूप में मनुष्य को व्याख्या के संदर्भ में इसके जैविक, बौद्धिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक इस प्रकार के पक्ष या संकायों को अलग-अलग विचारधाराओं में अलग-अलग विचारकों द्वारा महत्वपूर्ण माना गया है।

मनुष्य के जीवन का क्या लक्ष्य होना चाहिए?

इसी के अनुरूप प्रायः ये विचारक ये भी तय करते हैं कि मनुष्य के जीवन का क्या लक्ष्य होना चाहिए? जैसे-मनुष्य को अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कार्य करना चाहिए या फिर विवेकपूर्ण जीवन जीने का आदेश उसके जीवन का प्रमुख साध्य होना चाहिए।

भारतीय और पाश्चात्य परम्पराओं में मनुष्य की व्याख्या के संदर्भ में एक और महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी रहा है कि क्या मनुष्य केवल शरीर है या फिर शरीर के साथ-साथ इसका

कोई और संघटक या अवयव भी होता है? भारतीय विचारकों और प्रारंभिक पाश्चात्य विचारकों ने लगभग एकमत से यह स्वीकार कर लिया कि मनुष्यों में उसके जैविक या शारीरिक पक्ष के अलावा एक स्वतंत्र चेतन संकाय भी होता है जिसे प्रायः आत्मा के नाम से सूचित किया जाता है।

इसके बारे में यह माना जाता रहा है कि यह आत्मा नामक घटक अमर अविनाशी और नित्य है जबकि शरीर विनाशी और नश्वर है। इस पुस्तक के आगे के खण्डों में जब नीतिशास्त्र के साथ मानव का संबंध बनाने की चर्चा की जाएगी तब वहाँ वह उपर्युक्त बात इस रूप में उपयोगी होगी की जो विचारक मनुष्य की उपर्युक्त व्याख्याओं में से जिस व्याख्या को सही मानेगा वह उसी के अनुरूप अपने नीतिशास्त्र के मॉडल का चुनाव करेगा। उदाहरण के लिए यदि कोई विचारधारा मनुष्य को पशु के समान केवल जैविक प्राणी मान ले और आत्मा, विवेकशीलता, सामाजिकता जैसे मनुष्य के अन्य पक्षों की अवहेलना करे तो इस व्याख्या से जो मॉडल बनेगा वह मनुष्य के केवल जैविक जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाया जाएगा। उदाहरण के लिए-भारतीय दर्शन का **चार्वाक मॉडल** जिनके अनुसार “मनुष्य केवल शरीर है आत्मा जैसा कोई तत्व नहीं होता। इस जीवन के बाद मनुष्य का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है।” अतः मनुष्य की अपनी इस व्याख्या के अनुरूप चार्वाक विचारक यह घोषित करेंगे कि मनुष्य को केवल अपनी शारीरिक जरूरतों और सुख को प्राप्त करने के लिए ही प्रयास करना चाहिए। “**यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्**”।

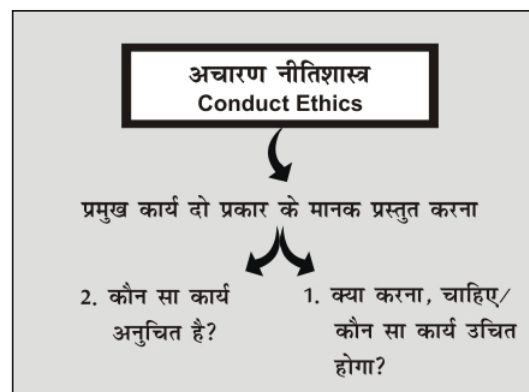
नीतिशास्त्र क्या है?

सामान्य शब्दों में नीतिशास्त्र का आशय वह विषय है जो यह बताता है कि हमें कब, कहाँ क्या करना चाहिए? अर्थात् मानवीय कार्यों का आदर्श निर्धारित करने वाला विषय या दूसरे शब्दों में मानवीय कार्यों की नीति या नियम बनाने वाला विषय नीतिशास्त्र कहा जाता है। लेकिन यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि नीतिशास्त्र यह नहीं बताता कि मनुष्य कब, कैसे कार्य करता है? अतः नीतिशास्त्र का संबंध इस संदर्भ में नीति बनाने से नहीं है कि वह मानव आचरण के उत्पत्ति या स्रोत के विषय में बताएँ अपितु **इथिक्स का संबंध इस बात से है कि मनुष्य को क्या करना चाहिए?** इस संदर्भ में यह विषय मूलतः मानव के आचरण के मानक तैयार करता है और

इसलिए इसे मानवीय विज्ञान कहा जाता है। यही नीतिशास्त्र का मनोविज्ञान से अंतर भी है जहाँ मनोविज्ञान हमें यह बताता है कि मनुष्य क्यों और कैसे कार्य करता है, वहीं नीतिशास्त्र का संबंध यह बताने से है कि उसे क्या करना चाहिए?

चूँकि मानव अपने जीवन में बिना कर्म किए नहीं रह सकता और उसे बहुत सारे संदर्भों, जीवन के क्षेत्रों, परिस्थितियों में कर्म करना पड़ता है ऐसे में मनुष्य को यह पता होना चाहिए कि वह इन परिस्थितियों, संदर्भों में क्या करे? क्योंकि यदि उसे इस रूप में उसे अपने कर्म के मानक नहीं ज्ञात होंगे तो कब क्या करना चाहिए वह इसका निर्णय नहीं ले पाएगा। यही मानव जीवन में नीतिशास्त्र की भूमिका उपस्थित होती है जो उसे ऐसे मानकों से परिचित करवाता है जिसके आधार पर मनुष्य यह जान पाता है कि उसे किस परिस्थिति में क्या करना चाहिए?

यही पर नीतिशास्त्र का एक अन्य पक्ष भी उपस्थित होता है कि क्या मनुष्य हर समय अपने आचरण के मानकों की पुस्तिका लिए फिरता रहे और परिस्थिति या अवसर आने पर इसमें यह देखकर निर्धारित करे कि इस अमुक परिस्थिति में क्या करना चाहिए और इसका नीतिशास्त्र में क्या मानक बताया गया है। अतः इसके समाधान के लिए नीतिशास्त्र कुछ और मानक तैयार करता है, जिनका संदर्भ इस बात से है कि मनुष्य को जैसे कर्म करवाने है उसी के अनुरूप मनुष्य में कुछ गुण विकसित किए जाए। जिससे आवश्यकता पड़ने पर मनुष्य को किसी मानव को देखने की जरूरत न हो बल्कि वह स्वयमेव अपने उस गुण के अनुरूप सदैव उचित कार्य का ही चुनाव करे।

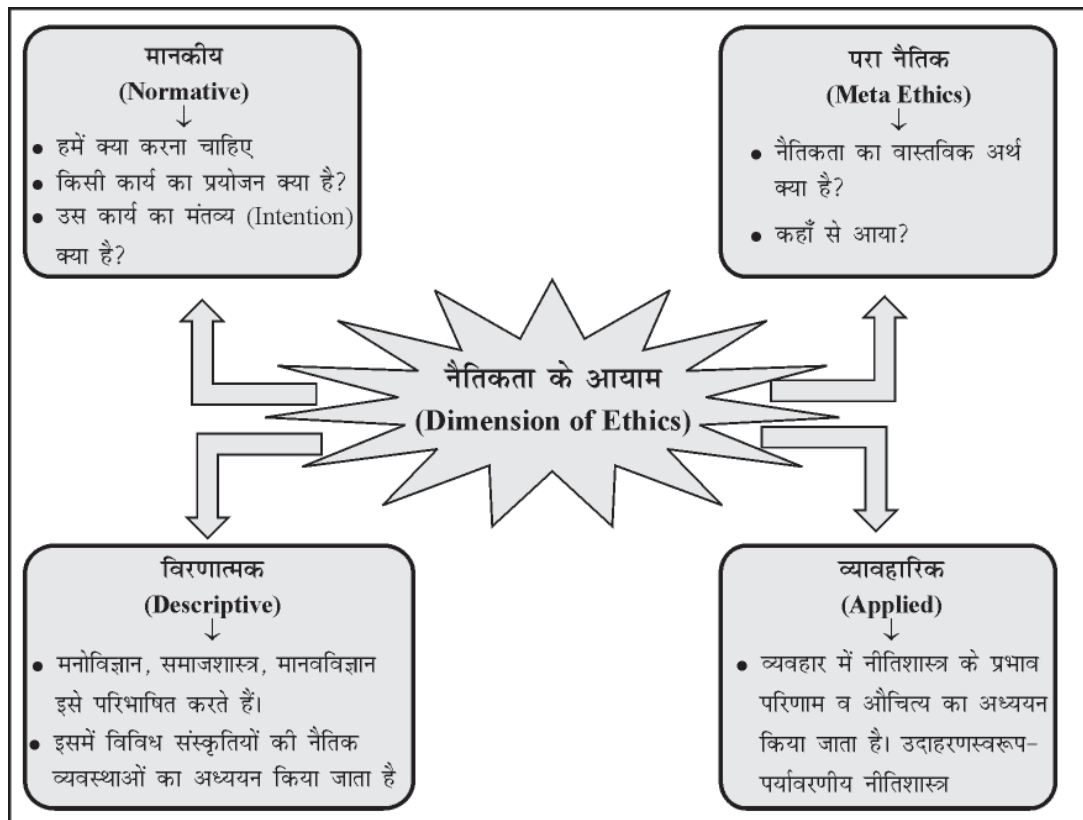


इस रूप में नीतिशास्त्र का दूसरा प्रमुख कार्य उन गुणों की सूची प्रस्तुत करना है जो उसके अनुसार मानवीय चरित्र में होने चाहिए, जिससे इन गुणों के होने पर मनुष्य सदैव वही करे जो उसे करना चाहिए था।

इसी प्रकार नीतिशास्त्र का दूसरा प्रमुख कार्य यह बताना है कि मनुष्य के चरित्र में कौन से आदर्श या मानकीय सदगुण होने चाहिए जिससे वह सदैव उचित कार्य का चुनाव करेगा। नीतिशास्त्र की ऐसी शाखा को जो मानकीय या आदर्श सदगुणों की व्याख्या करता है, सदगुण नीतिशास्त्र की व्याख्या करती है, सदगुण नीतिशास्त्र (Virtu Ethics) के नाम से जाना जाता है और उपर्युक्त दोनों शाखाओं को मिलाकर जो इथिक्स तैयार होता

है उसे 'आदर्शमूलक' या 'मानकीय नीतिशास्त्र' कहते हैं।

उपर्युक्त मानकीय नीतिशास्त्र के अलावा नीतिशास्त्र का कार्य जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों के संदर्भ में मानवीय कार्यों का एक 'कोड ऑफ कण्डक्ट' (Code of Conduct) भी तैयार करना होता है, जैसे-यदि मानव आर्थिक गतिविधियों का संचालन करता है या व्यवसाय करता है तो उसके संदर्भ में कैसे नियम होने चाहिए? व्यवसाय में किस प्रकार का व्यवसाय नैतिक कहलाएगा और कैसा व्यवसाय अनैतिक होगा। एक व्यवसायी का आचरण कैसा होना चाहिए आदि प्रश्नों का उत्तर नीतिशास्त्र की जिस शाखा में मिलता है उसे व्यावसायिक नीतिशास्त्र (Business Ethics) के नाम से जाना जाता है।



इसी प्रकार राजनीति कैसे करनी चाहिए? राजनीति का आदर्श क्या है? प्रशासन कैसे करना चाहिए? प्रशासनिक

अधिकारियों का आचरण कैसा होना चाहिए? पर्यावरण के प्रति मानव का व्यवहार कैसा होना चाहिए?

जनजीवन के अनेकों क्षेत्रों के संदर्भ में मानक तैयार करना भी नीतिशास्त्र का ही कार्य है जिन्हें क्रमशः राजनैतिक नैतिकता, प्रशासनिक नैतिकता, पर्यावरणीय नैतिकता के नामों से जाना जाता है और नीतिशास्त्र की इन सभी धाराओं को व्यवहारिक नीतिशास्त्र या अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र कहते हैं। अतः मानकीय नीतिशास्त्र और व्यावहारिक नीतिशास्त्र ये दो नीतिशास्त्र की प्रमुख धाराएं हैं।

नीतिशास्त्र का मानवीय सह संबंध में मनुष्य और नीतिशास्त्र के उपर्युक्त विवरण के आधार पर नीतिशास्त्र का मनुष्य के साथ क्या संबंध है, अब इस प्रश्न का सार्थक उत्तर प्राप्त किया जा सकता है। यदि मनुष्य एक जैविक या शारीरिक प्राणी है तो उसे क्या करना चाहिए उसके जीवन का लक्ष्य क्या होना चाहिए इत्यादि प्रश्नों का उत्तर निश्चित तौर पर मनुष्य को मूलतः आत्मा या आध्यात्मिक प्राणी मानने पर उसे क्या करना चाहिए के उत्तरों से भिन्न होगा। इस रूप में मानकीय नीतिशास्त्र जिसका कार्य मनुष्य के आचरण एवं चरित्र के मानक या आदर्श तैयार करना है।

इस बात पर निर्भर करेगा कि किसी विचारक या विचारधारा ने मनुष्य की व्याख्या किस रूप में की है। इसी आधार पर प्रायः मानकीय नीतिशास्त्र के दो बड़े उपवर्ग तैयार होते हैं जिनमें से एक मनुष्य को शारीरिक या भौतिक सत्ता मानता है और जिससे भौतिकवादी नीतिशास्त्र का विकास होता है। इस वर्ग के विचारक प्रायः स्वार्थवाद, निकृष्ट सुखवाद जैसे मानकीय नीतिशास्त्र का समर्थन करते हैं जिनका कि एकमात्र लक्ष्य है मनुष्य के शारीरिक एवं भौतिक जीवन को सुखमय बनाना। इस वर्ग के विचारकों में प्रारंभिक ग्रीक सम्प्रदाय-सैरेनाइक एवं अरिस्टोपस जैसे विचारक, आधुनिक युगीन हॉब्स एवं बेंथम को रखा जा सकता है। जबकि दूसरा वर्ग जो मनुष्य को शारीरिक मानने के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक प्राणी भी मानता है, वह मनुष्य के शारीरिक पक्ष की तुलना में उसके संवेगात्मक पक्ष पर ज्यादा बल देता है।

इस वर्ग के विचारक प्रायः परिष्कृत सुखवाद और परार्थवाद जैसे मानकीय नीतिशास्त्र का समर्थन करते हैं। जैसे-ग्रीक परम्परा के विचारक एपिक्यूरस और आधुनिक पाश्चात्य परम्परा के जे. एस. मिल इसी कोटि में आता है।

तीसरा वर्ग उन विचारकों का है जो मनुष्य को मूलतः विवेकशील प्राणी मानता है और उसके बौद्धिक पक्ष पर ज्यादा बल देते हैं। ऐसे विचारकों के अनुसार आदर्श, नैतिक जीवन भावनाओं पर विवेक के नियंत्रण से ही हासिल किया जा सकता है और नैतिक जीवन में बुद्धि एवं विवेक का महत्व होना चाहिए, संवेगों का नहीं। इस वर्ग के विचारकों में प्लेटो और कांट जैसे विचारक के साथ-साथ स्टोक्स-सिनिक जैसे सम्प्रदाय हैं। इसी प्रकार कुछ विचारकों के अनुसार मनुष्य में उसका आध्यात्मिक पक्ष ही प्रमुख है।

अतः मनुष्य को केवल आत्मा के विकास या आध्यात्मिक उन्नति के लिए ही प्रयास करना चाहिए। इस वर्ग के विचारकों में भारतीय दार्शनिक परम्परा के शंकराचार्य, गांधी जैसे विचारकों को रखा जा सकता है। वहीं कुछ दूसरे विचारकों के अनुसार मनुष्य का आध्यात्मिक पक्ष महत्वपूर्ण तो है परंतु मनुष्य आध्यात्मिक और भौतिक दोनों पक्षों का मिला-जुला रूप है। अतः नीतिशास्त्र को मानव के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों का मिलाजुला रूप है। अतः नीतिशास्त्र को मानव के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों के लिए मानक तैयार करना चाहिए। इस प्रकार का नीतिशास्त्र विवेकानंद, टैगोर, अरविन्द आदि जैसे भारतीय विचारकों को रखा जा सकता है। वहीं पश्चिमी नैतिक विचारकों में प्लेटो, जैसे विचारक इस वर्ग के अंतर्गत आएंगे।

वैशेषिक दर्शन का अभ्युदय और निःश्रेयस का विचार भी इसके अनुकूल है। इसी प्रकार मनुष्य को सामाजिक प्राणी मानने वाले विचारकों का मत है कि मनुष्य बिना समाज के नहीं रह सकता है और चूँकि समाज को चलाने के लिए अनेक संस्थाओं और नियमों की जरूरत होगी इसलिए मनुष्य की भूमिका का निर्धारण आदर्श सामाजिक व्यवस्था के अनुकूल होना चाहिए। ऐसे में नीतिशास्त्र का प्रमुख कार्य आदर्श समाज कैसा होना चाहिए, सामाजिक संस्थाएं कैसी होनी चाहिए, समाज की परंपराएं और प्रथाएं कैसी हो आदि प्रश्नों का उत्तर देना है। अरस्तु जैसे विचारक इसी प्रकार के विचारधारा के समर्थक हैं।

राज्य, समाज और मनुष्य इनमें कौन प्राथमिक है और कौन द्वितीयक इस आधार पर भी मानकीय नीतिशास्त्र के

अलग-अलग प्रकार होते हैं। जो विचारक राज्य या समाज को प्राथमिक मानते हैं वे कर्तव्य पर बल देते हैं और जो विचारक मनुष्य को प्राथमिक मानते हैं वे अधिकारों पर बल देते हैं। इस आधार पर भी मानकीय नीतिशास्त्र में कर्तव्य प्रधान नैतिकता और अधिकार प्रधान नैतिकता के दो वर्गों में बंट जाती है।

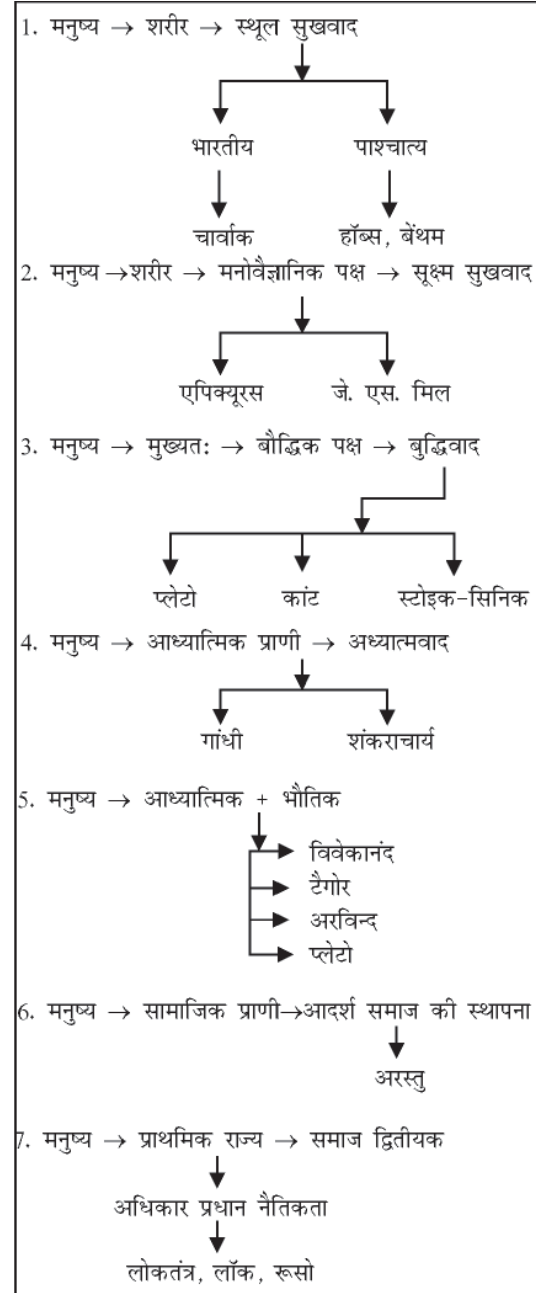
इनमें कर्तव्य प्रधान नैतिकता के प्रमुख उदाहरण प्लेटो, कांट, गीता और गांधी हैं तो दूसरी ओर अधिकार प्रधान नैतिकता का प्रमुख वर्ग आधुनिक लोकतंत्र लॉक, रूसो इत्यादि में देखने को मिलता है। नीतिशास्त्र का एक प्रमुख प्रश्न यह भी रहा है कि मनुष्य का आदर्श नैतिक जीवन किस मार्ग को अपनाने से संभव है और प्रायः इसके तीन उत्तर मिलते हैं।

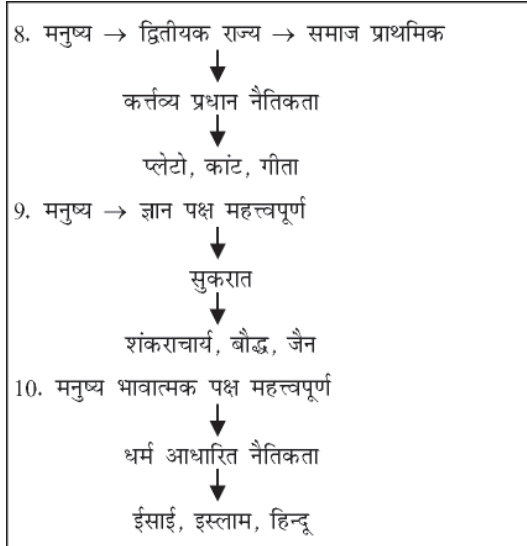
विचारकों और सम्प्रदायों का एक वर्ग वह है जो यह मानता है कि नैतिक होने के लिए और आदर्श जीवन जीने के लिए ज्ञान महत्वपूर्ण है। इस वर्ग में ग्रीस परम्पराओं के विचारक सुकरात जिनकी प्रसिद्ध उक्ति “ज्ञान ही सद्गुण है” के साथ-साथ प्लेटो जो प्रत्ययों के ज्ञान को नैतिकता से संबंधित करते हैं, जैसे-विचारक पश्चिमी परम्पराओं में महत्वपूर्ण हैं तो शंकराचार्य, बुद्ध जैसे विचारक और दर्शन भारतीय नीतिशास्त्र में प्रमुख स्थान रखते हैं। दूसरे वर्ग में वे विचारक आते हैं जो ज्ञान के स्थान पर भावना को नैतिकता का सबसे प्रमुख तत्व मानते हैं।

इसके अनुसार व्यक्ति में उचित संवेग, करुणा, प्रेम, दया उत्पन्न करना ही नीतिशास्त्र का सबसे प्रमुख कार्य है। इस वर्ग के नीतिशास्त्र में प्रमुख रूप से धार्मिक नैतिकता आती है, जैसे-ईसाई नैतिकता प्रेम, इस्लाम नैतिकता न्याय और बंधुत्व तो हिन्दू नैतिकता सहिष्णुता जैसे आदर्श को विकसित करने पर बल देती है।

तीसरा वर्ग उन विचारकों का है जो नैतिकता को मुख्य रूप से आदर्श कर्म से जोड़ते हैं। इनके अनुसार नैतिकता का क्रियाकलाप पक्ष ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इस वर्ग में अरस्तु जो नैतिकता को अभ्यास पर निर्भर मानता है, जैसे विचारकों के साथ गांधी और गीता के विचारों को भी रखा जाता है। गीता उपर्युक्त तीनों ज्ञान-संवेग, भक्ति और कर्म के समन्वय का आदर्श प्रस्तुत करती है और उसके अनुसार नैतिकता में ज्ञान, भावना और क्रिया तीनों की एकता शामिल होती है इसलिए नैतिकता के क्षेत्र में गीता को एक समन्वित

मॉडल के रूप में देखा जाता है।



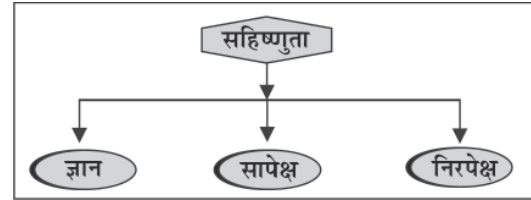


नीतिशास्त्र के साथ मानव के सह संबंध से तीन-चार महत्त्वपूर्ण मुद्दे उपस्थित होते हैं। इनमें से पहला इस बात से संबंधित है कि आखिर नैतिकता के पालन से क्या हासिल होगा? हमें मानव के संबंध में नीतिशास्त्र की जरूरत क्यों हुई? किसी मानव के लिए “**मैं नैतिक क्यों बनूँ**” इस प्रश्न के उत्तर नीतिशास्त्र के सार का निर्धारण करते हैं। भारतीय और पश्चिमी सभी समाजों और विचारधाराओं में प्रायः मानव जीवन का कोई न कोई आदर्श या लक्ष्य स्वीकार किया गया है जिसे पश्चिमी परम्पराओं में **यूडेमोनिया** (Edaimonia), **सममबोनम** (Sumumbonam) जैसे नाम से सूचित किया गया है जिसका आशय होता है मानव कल्याण। इसी प्रकार भारतीय परम्परा में जीवन के लक्ष्य के रूप में मोक्ष, अपवर्ग, कैवल्य, निःश्रेयस जैसे आदर्शों को मानव का चरम लक्ष्य माना गया है, जिसका आशय होता है, अज्ञान या दुःख से मुक्ति। वहीं आजकल के समकालीन संदर्भों में मानव जीवन का लक्ष्य गुणवत्तापरक जीवन, विकास और प्रगति।

इन निर्धारक तत्वों के जहाँ तक परिणाम का प्रश्न है तो इन निर्धारक तत्वों ने सकारात्मक नैतिक मूल्यों के निर्माण में मानव के चरित्र में सद्गुणों को विकसित करने में महती भूमिका निभाई है, वहीं जैसे भारतीय संस्कृति से हमें ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ का आदर्श इस्लाम से बंधुत्व, ईसाईयत से प्रेम,

समाजवाद, मार्क्सवाद से समानता का मूल्य, वृक्षों एवं पशुओं की पूजा से पर्यावरण संरक्षण इत्यादि लाभकारी नैतिक मूल्य और परिणाम हासिल हुए तो वहीं दूसरी ओर ऊपर दिखाए गए खाप पंचायत, रूढ़िवादिता के उदाहरणों से यह भी साबित होता है कि इन्होंने मानवीय मूल्यों को अपूरणीय क्षति पहुँचाई। वर्ण-व्यवस्था जैसी सामाजिक प्रथा न केवल सामाजिक समानता के आदर्श को ध्वस्त किया बल्कि लम्बे समय तक एक बड़ी जनसंख्या को मानवीय गरिमा तक के न्यूनतम और अनिवार्य अधिकार से वंचित रखा।

सती-प्रथा, बाल-विवाह, नर-बलि, पशु-बलि जैसे कुरीतियों ने नैतिक मूल्यों का हनन किया। इनमें से तमाम कुरीतियों के कारण ही आज भी महिलाओं को समानता नहीं मिल पा रही है। उदाहरण के लिए संपत्ति का कानूनी अधिकार होने के बावजूद भी सामाजिक रूढ़िवादी कुरीतियों के कारण आज भी समाज का एक वर्ग वंचना का शिकार है।



यदि कोई किसी ज्ञान को निरपेक्ष मान ले तो भी उसके प्रति सहिष्णुता बढ़ जाती है, जैसे-शुद्ध यदि वर्ण को स्वीकार कर ले और उसे ईश्वरीय नियम मान लें तो उनमें वर्ण व्यवस्था को सहन करने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाएगी जिसमें कोई परिवर्तन नहीं किया जाएगा। पितृसत्ता + स्त्रियाँ स्वयं को परम्परागत समाज में पति को परमेश्वर, उसकी हर बात सहन करती है। राजतंत्र + राजा कुछ गलत नहीं करता। जैन सहिष्णु केवलिन का ज्ञान निरपेक्ष को स्वीकार करते हैं।

2. सहिष्णुता + मूल्य + स्वतंत्रता

(a) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (जे. एस. मिल)

(b) बंधुत्व से सहिष्णुता

(c) मानवीय गरिमा के आदर्श से सहिष्णुता

(d) लोकतंत्र से सहिष्णुता

जैसे आदर्शों को लक्ष्य के रूप में स्वीकार करता है और इसी संदर्भ में यह सवाल उत्पन्न होता है कि यह यूडेमोनिया, सममबोनम, मोक्ष या प्रगति के लक्ष्य को हासिल करने के लिए

क्या करना चाहिए? इनके संदर्भ में किस प्रकार का आचरण उचित होगा और कैसा अनुचित। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मानवीय चरित्र में क्या-क्या सदगुण होने चाहिए।

इस रूप में चाहे आचरण नीतिशास्त्र हो या सदगुण नीतिशास्त्र, यह मानव जीवन के अंतिम लक्ष्य या साध्य को प्राप्त करने का साधन है। अतः यह कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण नीतिशास्त्र साधन की व्याख्या करता है। जैसे-यदि जैन दार्शनिकों के अनुसार कैवल्य प्राप्त करना जीवन का साध्य या लक्ष्य है तो पंचमहाव्रत का सिद्धांत जो बताता है कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसी लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन है। ऐसे ही यदि मार्क्सवाद के अनुसार साम्यवादी व्यवस्था हमारा साध्य है तो हिंसा, क्रांति इत्यादि का नीतिशास्त्र हमारा साधन है।

गीता दर्शन में न्याय साध्य है तो वर्णधर्म के अनुसार धर्मयुद्ध करना साधन है। इस प्रकार संपूर्ण नीतिशास्त्र मूलतः मनुष्य को उसके जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करवाने वाला साधन है। इसी संदर्भ में सभी आधुनिक विचारधाराएं-समाजवाद, उदारवाद, लोकतंत्र, मार्क्सवाद, गांधीवाद इत्यादि नैतिक विचारधाराएं हैं। क्योंकि ये सभी किसी न किसी आदर्श को प्राप्त करने का साधन है।

प्लेटो, अरस्तू, गांधी, मार्क्स, अंबेडकर सभी प्रमुख समाज सुधारक और प्रशासक इसी संदर्भ में नैतिकता से संबंधित माने जाते हैं क्योंकि इन सबने मनुष्य, राज्य, समाज के आदर्श और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए या तो कोई नया नैतिक विचार साधन के रूप में ईजाद किया था फिर किसी नए तरीके से राज्य, समाज को अपने आदर्श प्राप्त करने में सहायता की। जैसे-**किरण बेदी, टी. एन. शेषन** इसी संदर्भ में नीतिशास्त्र से जुड़ते हैं कि इन दोनों ने क्रमशः दण्ड के आदर्श को कैसे अर्थात् किस साधन से प्राप्त किया जाए। जहाँ इस संदर्भ में अभिनव प्रयोग किए वहीं टी. एन. शेषन ने लोकतंत्र के आदर्श या साध्य को कैसे चुनाव सुधार के माध्यम से हासिल किया जाए इस पर बल दिया।

इस प्रकार **राजा राममोहन राय, ज्योतिबा फुले** जैसे समाज सुधारक समानता के आदर्श को कैसे प्राप्त किया जाए इसके साधन के रूप में विभिन्न कार्यक्रमों और उपाय सुझाने के कारण नीतिशास्त्र से जुड़ जाते हैं। जहाँ समाज सुधारकों और प्रशासकों ने अपने आप को नीतिशास्त्र के केवल साधन वाले

पक्ष में सीमित रखा है वहीं प्लेटो और गांधी जैसे दार्शनिकों ने मानव जीवन के आदर्श या लक्ष्य की भी व्याख्या की है। साथ ही साथ इस लक्ष्य को कैसे प्राप्त किया जाए इसके साधन के रूप में नीतिशास्त्र को बताया।

नीतिशास्त्र के निर्धारक तत्व

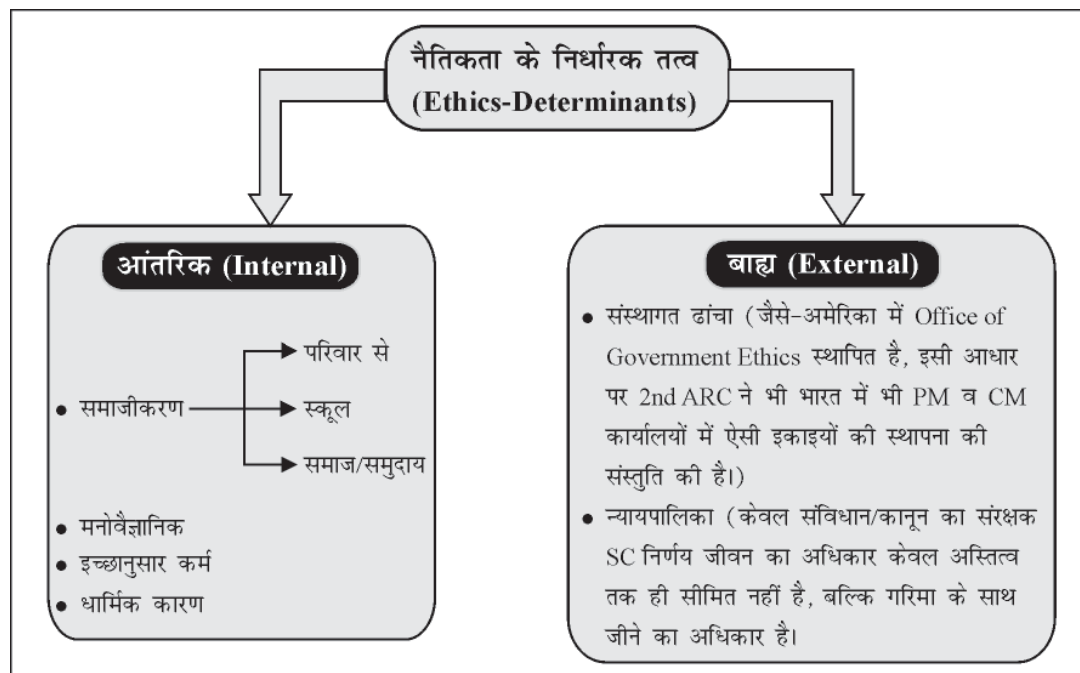
नीतिशास्त्र का संबंध सदगुणों और आचरण के मानकों से है। अतः सदगुण और आचरण के मानक समाज, संस्कृति, शिक्षा, भौगोलिक परिवेश, विचारधारा, राजनीतिक व्यवस्था इत्यादि कारकों से बनाए जाते हैं। इसलिए नीतिशास्त्र के निर्धारक तत्वों में उपर्युक्त घटकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। उदाहरण के लिए यदि भारतीय परम्परा में बंदरों को सांस्कृतिक और धार्मिक रूप से पवित्र एवं देवत्व से युक्त माना जाता रहा था। तो हम पाते हैं कि वानरों के मांसाहार का प्रचलन समाज में नहीं है जबकि भारत के ही कुछ पूर्वोत्तर राज्यों और अफ्रीका के कुछ देशों में यह प्रचलित है। यदि भारत के एक बड़े भू-भाग में वानरों की वजह से कृषि समेत अनेक संसाधनों की वानरों द्वारा क्षति हो तो भी प्रायः भारतीय इन्हें मारने से बचते हैं। ऐसे में संस्कृति के द्वारा स्वतः यह मूल्य स्थापित हो गया कि वानरों को नहीं मारना चाहिए।

भारत में पर्यावरण की रक्षा के लिए चलाया गया '**चिपको आंदोलन**' भी जो पर्यावरणीय नैतिकता और पर्यावरण संरक्षण की एक मिसाल है-मूलतः एक सांस्कृतिक मूल्य है। मूलतः एक सांस्कृतिक मूल्य से ही प्रभावित है। इसी प्रकार अनेक सामाजिक प्रथाएं भी नैतिकता का निर्धारण करती हैं, जैसे-भारत के कुछ भू-भागों में खाप पंचायत नामक व्यवस्था से विवाह के संदर्भ में एक रुढ़िवादी सामाजिक क्षमता का निर्माण हो गया है।

इसी प्रकार दहेज-प्रथा, महिलाओं को संपत्ति में अधिकार न देने की प्रथा ने समाज में एक नैतिक मूल्य जैसा स्थान बना रखा है। इतने वृद्ध कानूनों के बावजूद आम भारतीय विवाहों में खुले तौर पर दहेज दिया और लिया जाता है।

संस्कृति और सामाजिक परंपराओं के अतिरिक्त शिक्षा प्रणाली भी नैतिकता को सहज रूप में प्रभावित करती है। जैसे भारत जैसे देश में ही अल्पसंख्यकों को अपने संस्कृति और धर्म की शिक्षा अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थानों में देने की छूट मिलने के कारण अल्पसंख्यक संस्कृति व मूल्य, शिक्षा व्यवस्था द्वारा इन व्यक्तियों के चरित्र में भी समावेशित हो

जाते हैं। जैसे-मुस्लिम समुदाय के व्यक्तियों के विवाह और तलाक के नियम समेत महिलाओं के अधिकारों के संदर्भ में इनका दृष्टिकोण इत्यादि पारम्परिक शिक्षा प्रणाली द्वारा इनमें प्रसारित कर दिया जाता है।



प्रायः बहुसंख्यक भी अपने बहुत सारे मूल्य कहीं न कहीं से शिक्षा व्यवस्था द्वारा ही ग्रहण करते हैं। उपर्युक्त उदाहरणों की भांति ही किसी राज्य में विद्यमान एक राजनीतिक विचारधारा उस राज्य के नागरिकों में लंबे समय में उसी प्रकार के राजनीतिक मूल्यों एवं विश्वास की स्वीकार्यता पैदा कर देती है, जैसे-लंबे समय तक भारतीय उपमहाद्वीप में राजतंत्रात्मक व्यवस्था के विद्यमान रहने के कारण जब 1950 में हमारा देश गणतंत्र भी बन गया तब भी लोकतांत्रिक प्रक्रिया के द्वारा बहुत से वहीं लोग संसद और विधानसभाओं में पहुँचे जो राजघराने से ताल्लुक रखते थे। क्योंकि लंबे समय तक एक राजतंत्रात्मक प्रणाली में रहने के कारण लोकतंत्र आ जाने के बावजूद जनता समानता के मूल्य को स्वीकार और अंगीकार नहीं कर पा रही थी।

यहाँ तक कि अभी भी भारत में मौजूद परिवारवाद एवं अभिजात्यता इस बात की सूचक है कि भारत में अभी भी

सामंतवाद की मूल्य लोगों के अवचेतन में विद्यमान है। उपर्युक्त उदाहरण की तरह ही यदि हम विचारधारा को नैतिकता के निर्धारक के तौर पर समझने का प्रयास करें तो इसके उदाहरण में हमें भारतीय समाज में मौजूद लम्बे समय से चली आ रही आध्यात्मिकता की प्रवृत्ति, आत्मवाद की प्रवृत्ति, नैतिक मूल्यों में साफ तौर पर दिखाई देती है। आज भी हम मृतक की आत्मा की शांति के लिए कर्मकांडों में शरीक होते हैं, आज भी जनमानस ऐसे लोगों को नैतिक मानते हुए अच्छी दृष्टि से देखता है जिन्होंने जगत मिथ्या है, ऐसा मानते हुए जगत से संन्यास लेकर गेरूआ वस्त्र धारण कर लिया हो। अतिथि को देवता मानने की परम्पराओं आदि हमारे विचारधाराओं से ही संबंधित रही है।

इस प्रकार संक्षेप में कहा जा सकता है मार्क्सवाद, समाजवाद, उदारवाद जैसी विचारधाराओं में तो पूरी दुनिया का नक्शा ही दिल दिया। इन विचारधाराओं में शामिल नैतिकता के

नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा एवं अभिवृत्ति

विश्वास के आधार पर नए राज्य खड़े हुए और पुराने व्यवस्था में परिवर्तन हुआ। 1644 के इंग्लैंड के गृह युद्ध से लेकर फ्रांसीसी, रूसी, चीनी क्रांति तथा शीत युद्ध सब विचारधाराओं से उत्पन्न नैतिकता से ही प्रभावित रहे हैं। उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि नीतिशास्त्र के निर्धारक तत्वों में भौगोलिक परिवेश से लेकर विचारधारा तक का हाथ रहा है।

नीतिशास्त्र और विज्ञान

नीतिशास्त्र मूलतः एक विज्ञान है परंतु यह जानने से पहले कि यह किस प्रकार का विज्ञान है? यह जानना जरूरी है कि विज्ञान कितने प्रकार के होते हैं और साथ ही साथ विज्ञान का मुख्य कार्य क्या होता है?

**विज्ञान
क्या
है?**

- वह विषय या अध्ययन की वह विधा जिसमें हम किसी क्षेत्र या विषय की समस्या का निष्पक्ष निरीक्षण, परीक्षण और वर्णन करते हैं, उसे विज्ञान के नाम से जाना जाता है।
- विषय या समस्याएं अलग-अलग हैं इसलिए इनका अध्ययन करने वाले विज्ञान भी अलग-अलग हैं।
- उदाहरण के लिए-हमारे ये भौतिक जगत कैसे बना?
- यह कैसे कार्य करता है?
- इसकी व्याख्या किन मूलभूत नियमों से की जाती है?
- भौतिक जगत का ऐसा विश्लेषण और वर्णन करने वाला विषय भौतिक विज्ञान कहलाता है।
- इसी प्रकार प्राणियों का अध्ययन करने वाला विज्ञान जीव विज्ञान, वनस्पतियों का अध्ययन करने वाला वनस्पति विज्ञान।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि विज्ञान का एक आशय वस्तुनिष्ठ और निष्पक्ष वर्णन करने वाले विषय या विधि से लिया जाता है। परंतु सभी विज्ञान इसी उपर्युक्त अर्थ में विज्ञान नहीं है अपितु एक-दूसरे में भी विज्ञान शब्द का प्रयोग होता है।

इस दूसरे अर्थ में विज्ञान का आशय उस विषय से लिया जाता है जिसका प्रमुख कार्य मानक बनाना और उन मानकों के आधार पर किसी विषय, परिस्थिति या व्यक्ति का मूल्यांकन करना होता है। उदाहरण के लिए सुंदरता क्या है? सुंदरता के क्या-क्या प्रतिमान होते हैं? इन प्रतिमानों के आधार पर किसी व्यक्ति का मूल्यांकन करना कि वह सुंदर है या नहीं। ऐसा कार्य करने वाला विषय उपर्युक्त दूसरे अर्थ में ही सौन्दर्य

विज्ञान के नाम से जाना जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि विज्ञान मूलतः दो प्रकार के हैं-एक वे जो विवरण देते हैं, वर्णन करते हैं तथा दूसरे वे जो मानक बनाते हैं और मूल्यांकन करते हैं। उनमें से पहले को वर्णनात्मक विज्ञान (Descriptive Science) तथा दूसरे को मानकीय विज्ञान (Normative Science) के नाम से जाना जाता है।

**नीतिशास्त्र
किस प्रकार
का
विज्ञान
है?**

- नीतिशास्त्र मानकीय विज्ञान है जिसका प्रमुख कार्य मानक बनाना और मूल्यांकन करना है। ऐसे में सहज ही ये प्रश्न उठता है कि नीतिशास्त्र कौन से मानक बनाता है और किसका मूल्यांकन करता है?
- इस प्रश्न के उत्तर से ही नीतिशास्त्र का स्वरूप स्पष्ट हो जाएगा।
- नीतिशास्त्र मानव के व्यक्तित्व और चरित्र का मानक बनाता है।
- इन मानकों के आधार पर यह मूल्यांकन करता है कि किस प्रकार के चरित्र या व्यक्तित्व को हम अच्छा कहेंगे और किस प्रकार के चरित्र या व्यक्तित्व को बुरा कहेंगे।
- इसी प्रकार नीतिशास्त्र मानव के अपनी मर्जी/इच्छा से किए गए कार्यों के लिए भी मानक बनाता है।
- इन मानकों के आधार पर मूल्यांकन करा है कि किन मानवीय कर्मों को हम उचित कहेंगे और किस मानवीय कर्मों को अनुचित।

यहाँ यह जानना महत्वपूर्ण होगा कि जीवन के अलग-अलग क्षेत्र के लिए अलग-अलग प्रकार के व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। जैसे व्यवसाय के क्षेत्र में हमें एक ऐसे व्यक्तियों की जरूरत होगी जिसमें अधिक से अधिक काम करने की क्षमता व इच्छा हो। साथ ही साथ प्रतिस्पर्द्धा करने, नियमों के अंतर्गत कार्य करते हुए लाभ बढ़ाने की योग्यता आदि एक व्यवसायी के व्यक्तित्व में होनी चाहिए। ऐसे में जब हम व्यावसायिक नैतिकता (Business Ethics) पर चर्चा करते हैं तो सद्गुणों की सूची और उचित कार्यों का मानक उस संदीर्घ से बिल्कुल अलग होता है। जब हम जीवन के किसी दूसरे क्षेत्र के लिए सद्गुणों की ओर उचित कर्मों की सूची बनाते हैं, जैसे-लाभ कमाने के उद्देश्य से कार्य करना व्यावसायिक नैतिकता में उचित माना जाएगा लेकिन यदि एक सरकारी चिकित्सक मरीजों की चिकित्सा लाभ कमाने के उद्देश्य से

करने लगे तो उसका कार्य अनुचित माना जाएगा। इस रूप में अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र हमें बताता है कि हम जिस क्षेत्र विशेष में चरित्र या कार्यों का मूल्यांकन करना चाहते हैं उसके लिए क्या-क्या आधार होने चाहिए?

सिविल सेवा में नीतिशास्त्र का औचित्य व भूमिका

जैसे नीतिशास्त्र जीवन के हर क्षेत्र के लिए मानक तैयार करता है और मूल्यांकन करता है, ठीक उसी प्रकार सिविल सेवक कैसे होने चाहिए? उनके व्यक्तित्व या चरित्र में किस प्रकार के सद्गुण होने चाहिए? उन्हें किस प्रकार के कार्य करने चाहिए? इत्यादि प्रश्नों के समाधान का कार्य करना भी नीतिशास्त्र का ही एक अंग है। जब तक प्रशासनिक अधिकारी जिनका व्यक्तित्व या चरित्र इन नैतिक गुणों के अनुकूल नहीं होगा जिनकी सिविल सेवा में जरूरत होती है तब तक वे अच्छे प्रशासक नहीं होंगे।

इसी प्रकार जब तक भावी सिविल सेवकों को क्या उचित है क्या अनुचित? सिविल सेवा में किन कार्यों की उनसे अपेक्षा है? इनका बोध नहीं होगा तब तक वे प्रशासनिक अधिकारी बनने के बाद प्रशासन के लक्ष्यों एवं आदर्शों के अनुकूल कार्य नहीं कर पाएंगे। इस रूप में नीतिशास्त्र का प्रश्न-पत्र सिविल सेवा के लिए योग्य उम्मीदवारों की परीक्षा करने हेतु जोड़ा गया है जिससे यह जांच की जा सके कि जो लोग सिविल सेवक बनना चाहते हैं उनका चरित्र इस सेवा की मानक के अनुरूप है या नहीं। उन्हें उचित-अनुचित का पर्याप्त बोध है या नहीं उनमें उचित निर्णय लेने की और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता है या नहीं। **संक्षेप में नीतिशास्त्र, सिविल सेवा के उम्मीदवारों की अभिवृत्ति (Attitude) की जांच करने के लिए सम्मिलित किया गया है।**

सिविल सेवा में सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-IV का पाठ्यक्रम और उसका औचित्य

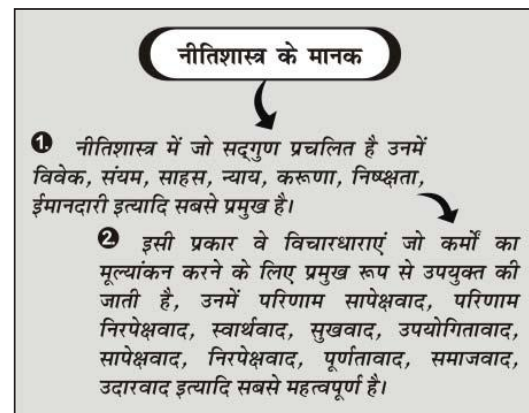
उपर्युक्त विवरण से चुंकि यह स्पष्ट हो चुका है कि नीतिशास्त्र का प्रश्न-पत्र सिविल सेवा में जाने की आकांक्षा रखने वाले उम्मीदवारों के व्यक्तित्व परीक्षण हेतु सम्मिलित किया गया है। अतः यह स्वभाविक है कि उन उम्मीदवारों की योग्यता (Aptitude) की जांच उन सभी क्षेत्रों में होना चाहिए कि उनमें सिविल सेवा के मांग के अनुरूप सद्गुण है या नहीं। उन्हें सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में कैसे कार्य किए जाने चाहिए इसका बोध है या नहीं। उन्हें सामाजिक-आर्थिक

क्षेत्रों में भारतीय राज्य और समाज की विभिन्न समस्याओं का ज्ञान है यानहीं और साथ ही साथ विभिन्न परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता है या नहीं।



नीतिशास्त्र के मानक

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि नीतिशास्त्र मानवीय चरित्र अंतर कर्मों का मानक बनाने वाला और मूल्यांकन करने वाला विषय है। अतः स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है कि वे कौन से मानक हैं जिनके आधार पर हम मानवीय चरित्र या कर्मों का मूल्यांकन करते हैं। इस प्रश्न के उत्तर में यह जानना चाहिए कि चरित्र के मानकों को सद्गुण (Virtue) कहते हैं और इसी प्रकार कर्मों के मानकों को प्रायः विचारधारा कहते हैं अर्थात् सद्गुण वे आधार हैं जिनको हम तय करते हैं कि मनुष्य अच्छा है या बुरा और विचारधाराएं वे आधार हैं जिनसे हम निर्धारित करते हैं कि मनुष्य ने उचित कार्य किया या अनुचित।



इसका आशय है कि नीतिशास्त्र का अध्ययन करने के क्रम में विद्यार्थी को सबसे पहले सद्गुणों और विचारधाराओं को जानना होगा।

नीतिशास्त्र के प्रकार

वैसे तो नीतिशास्त्र चार मुख्य शाखाओं में विभाजित किया जाता है परंतु इनमें से दो अधिक प्रचलित हैं -

(i) मानकीय नीतिशास्त्र (Normative Ethics)

(ii) अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र (Applied Ethics)

मानकीय नीतिशास्त्र मानक तैयार करता है और अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में लागू करता है। उदाहरण के लिए एक विद्यार्थी ईमानदारी या सत्यनिष्ठा क्या है? उपयोगितावाद क्या है? इनके मानकों का अध्ययन करे तो वह मानकीय नीतिशास्त्र के सिद्धांतों को पढ़ता है। परंतु जब इन्हीं सिद्धांतों को वह समाज या राज्य की किसी विशेष कार्य या संदर्भ में लागू करने लगे तो वह अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र कहलाता है। जैसे एक चिकित्सक के व्यक्तित्व में क्या गुण होने चाहिए या चिकित्सक को कैसे कर्म करने चाहिए? इसका अध्ययन चिकित्सकीय नीतिशास्त्र कहलाता है।

इसी प्रकार एक प्रशासनिक अधिकारी का व्यक्तित्व कैसा होना चाहिए? उसे कैसे कार्य करने चाहिए? इसका अध्ययन प्रशासकीय नीतिशास्त्र कहलाता है। ऐसे ही जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों में किस प्रकार के कर्म किए जाने चाहिए और इनको करने वालों में व्यक्तित्व कैसे होने चाहिए इसका अध्ययन करना ही अनुप्रयुक्त (Applied) नीतिशास्त्र का मुख्य कार्य है।

सिविल सेवा में नीतिशास्त्र की भूमिका समझने से पूर्व यह जानना आवश्यक होगा कि सिविल सेवा का कार्यक्षेत्र क्या है? क्योंकि इसी कार्य क्षेत्र को ध्यान में रखकर ही इस क्षेत्र के अनुरूप मानकों का निर्धारण होगा और इस प्रकार के कार्य उचित या अनुचित माने जाएंगे, यह भी तय होगा। चूंकि सिविल सेवा भारतीय राज्य के आदर्शों और लक्ष्यों से प्राप्त करने का महत्वपूर्ण साधन है।

अतः सिविल सेवा के मानक वही होंगे जो भारतीय राज्य के आदर्श और मूल्य हैं। उदाहरण के लिए भारतीय राज्य का एक प्रमुख मूल्य समाजवाद है जिसके अनुसार राज्य सभी बुनयादी संसाधन प्रदान कर सामाजिक-आर्थिक समानता लाने का प्रयास करता है। अतः सिविल सेवा से भी यही अपेक्षा

है कि वह राज्य के इस आदर्श को स्वीकार कर राज्य को अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता प्रदान करे। परंतु ऐसा तभी होगा जब सिविल सेवा में जाने वाले सिविल सेवकों में वर्चित वर्गों के प्रति करूणा, समानुभूति जैसे सद्गुण विद्यमान हों। ऐसे में इस प्रश्न-पत्रों में पाठ्यक्रम में सिविल सेवकों उपर्युक्त मूल्य शामिल है या नहीं इस बात का जांच करना स्वाभाविक रूप से शामिल है। ऐसे ही राज्य के आदर्शों के प्रति निष्ठा, सेवाभाव, सत्यनिष्ठा या ईमानदारी, और वस्तुनिष्ठता जैसे आधारभूत मूल्य चूंकि राज्य के आदर्शों को प्राप्त करने के लिए अनिवार्य हैं। इसलिए इन्हें भी सिविल सेवक के व्यक्तित्व में होना चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखकर सिविल सेवा के पाठ्यक्रम में उपर्युक्त सभी मूल्यों की परीक्षा को पाठ्यक्रम का एक खंड बनाया गया है।

चूंकि सिविल सेवक के समक्ष जो चुनौतियां आती हैं वे सामाजिक प्रथाओं, परम्पराओं के कारण भी आती हैं। अतः उससे यह अपेक्षा है कि वह समाज के इन पक्षों से भी परिचित हों जिसके फलस्वरूप उसमें उचित निर्णय लेने के लिए पाठ्यक्रम में परिवार, प्रथा, परंपरा इत्यादि खंडों को सम्मिलित किया गया है। उपर्युक्त पूरी परिचर्चा को निम्न उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है-हमारे समाज में दहेज एक प्रथा के तौर पर सैकड़ों वर्षों से प्रचलित है और समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा इस प्रथा को अनुचित नहीं मानता। परंतु राज्य लैंगिक समानता के आदर्श के अंतर्गत 1960 में ही कानून बनाकर दहेज को प्रतिबंधित कर चुका है। ऐसे में सीधे तौर पर राज्य के आदर्श और सामाजिक प्रथा के बीच विरोध है। यदि किसी प्रशासक पर सामाजिक प्रथाओं, सामाजिक परिवेश का बहुत अधिक प्रभाव हो तो संभव है कि वह ऐसे अपराध को प्रायः नजरअंदाज करे। जिससे राज्य के लैंगिक समानता के आदर्श में बाधा पहुँचेगी।

इसीलिए नीतिशास्त्र के पाठ्यक्रम में न सिर्फ समाज की जानकारी आपसे अपेक्षित है बल्कि विभिन्न समाज सुधारकों के और विचारधाराओं ने जो सामाजिक परिवर्तन किया था सुझाया है। उसकी जानकारी भी आपसे अपेक्षित है इसलिए नीतिशास्त्र के पाठ्यक्रम के महान समाज-सुधारक और नेताओं के बारे में जनता शामिल किया गया है।

चूंकि हमारा जीवन सार्वजनिक और निजी इन दो क्षेत्रों में बंटा होता है और दोनों ही क्षेत्रों के लिए कुछ आदर्श और मानक होते हैं जो यह बताते हैं कि सार्वजनिक जीवन कैसा

होना चाहिए? और निजी जीवन कैसा होना चाहिए? इन दोनों क्षेत्रों के मूल्यों का अलगाव कई स्थानों पर बहुत महत्वपूर्ण होता है। उदाहरण के लिए निजी जीवन में हमें धार्मिक होने की आजादी है परंतु सार्वजनिक जीवन में एक सिविल सेवक के तौर पर धर्मनिरपेक्षता का राज्य का आदर्श हमारा मूलभूत ढांचा है।

ऐसे में एक ही व्यक्ति से यह अपेक्षा होती है कि वह अपने निजी जीवन में तो धार्मिक हो सकता है परंतु सार्वजनिक जीवन में उसे धर्मनिरपेक्षता के आदर्श को आत्मसात करना चाहिए। इसी महत्वपूर्ण विभाजन पर सिविल सेवा में शामिल होने वाले विद्यार्थियों को इतनी जानकारी इस बात की परीक्षा लेने के लिए पाठ्यक्रम में निजी और सार्वजनिक जीवन के विभाजन को शामिल किया गया है।

चूंकि चाहे धर्मनिरपेक्षता जैसे आदर्श हो या फिर समाजवाद, लोकतंत्र जैसी विचारधाराएं हों। ये सब विभिन्न विचारकों और दार्शनिकों के द्वारा स्थापित की गई है। जिन्होंने भारत समेत दुनिया के बहुत से राज्य मानक/आदर्श के रूप में स्वीकारते हैं। इसीलिए नीतिशास्त्र के प्रश्न-पत्र में अभ्यर्थियों से यह अपेक्षा भी की गई है कि वे भारत और पश्चिम के ऐसे दार्शनिकों और उनकी विचारधाराओं से परिचित हों यह भी नीतिशास्त्र के पाठ्यक्रम का एक हिस्सा है।

चूंकि नीतिशास्त्र का संबंध मानवीय कार्यों से है जो मानव को यह बताता है कि उसे क्या कार्य करने चाहिए और मानव प्रायः अपने कार्यों का चयन अपने भावना या परिवेश के आधार पर बनाई गई अभिवृत्तियों से करता है। अतः प्रायः मानव के अनुचित कार्यों को परिवर्तित करवाने के लिए उसकी अभिवृत्ति बदलनी होती है। उदाहरण के लिए यदि एक परंपरागत हिन्दू व्यक्ति यह मानता हो कि सम्पत्ति के उत्तराधिकार में केवल पुरुषों को ही सम्पत्ति मिलनी चाहिए और वह हिन्दू धर्म की मान्यताओं के आधार पर इसे उचित भी मानना है तो ऐसे व्यक्ति से उसकी पुत्री को सम्पत्ति दिलवाना तक संभव नहीं होगा जब तक इस व्यक्ति की अभिवृत्ति (Attitude) में बदलाव न किया जाए। क्योंकि उस उदाहरण में समस्या इस बात को लेकर है कि राज्य स्त्रियों को आर्थिक समानता दिलाना चाहती है और इस लक्ष्य की प्राप्ति राज्य ने हिन्दू उत्तराधिकार के नियमों में परिवर्तन कर स्त्रियों को सम्पत्ति में हिस्सेदारी का कानून तो बना दिया परंतु यदि समाज के हिन्दू व्यक्तियों की अभिवृत्ति उपर्युक्त वर्णित व्यक्ति जैसी ही

हो तो राज्य द्वारा बनाया गया यह कानून केवल कानून की किताबों तक ही सीमित रह जाएगा।

इस रूप में यदि समाज या व्यक्ति किसी एक कार्य को उचित मानता हो और राज्य किसी दूसरे कार्य को तो जब तक सामाजिक मनोविज्ञान और व्यक्तियों की अभिवृत्ति को बदल न दिया जाए तब तक उन्हें राज्य के आदर्शों के अनुरूप उचित कार्य करने के लिए प्रेरित नहीं किया जा सकता। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर सिविल सेवा में पाठ्यक्रम में हमारे कार्यों को प्रभावित करने के लिए अभिवृत्ति की जानकारी की अपेक्षा भी अभ्यर्थियों से की गई है। अर्थात् अभ्यर्थियों को यह जानना होगा कि अभिव्यक्ति कैसे हमारे कार्यों को प्रभावित करती है? कैसे बनती है? क्या-क्या घटक होते हैं?

चूंकि सिविल सेवा की परीक्षा अनेक पदों के लिए होने वाली परीक्षा है जिसमें एक संयुक्त परीक्षा के माध्यम से भी चयनित होकर प्रशासनिक सेवा, विदेश सेवा, राजस्व सेवा, पुलिस सेवा जैसे विभिन्न सेवाओं में कार्य करते हुए राज्य के विभिन्न आदर्शों को प्राप्त करने का उद्देश्य शामिल होता है।

इसीलिए सिविल सेवा के पाठ्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों, विभिन्न फंडिंग एजेंसीज से होने वाली फंडिंग इत्यादि मुद्दों को भी नीतिशास्त्र के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। चूंकि हम प्रशासकों को सरकार की विभिन्न नीतियों को लागू करना होता है। इसीलिए इस पाठ्यक्रम में शासन (Governance), लोकनीति (Public Policy) इत्यादि मुद्दे भी सम्मिलित हैं।

अंत में यह पाठ्यक्रम अभ्यर्थियों से यह भी अपेक्षा रखता है कि शासन-प्रशासन को नैतिक बनाने के लिए समय-समय पर विभिन्न समितियों ने जो सुझाव दिए हैं, जैसे-प्रशासनिक सुधार आयोग (ARC), अलग समिति इत्यादि की रिपोर्ट से भी विद्यार्थी का परिचय होना चाहिए। साथ ही साथ प्रशासनिक सुधार आयोग की रिपोर्ट में प्रशासन को नैतिक बनाने के लिए विदेशों में भी जो आयोग और समितियां बनाई गई हैं, उनका जो हवाला दिया गया, जैसे-**नोलन समिति रिपोर्ट** जिसका उल्लेख ARC करती है। इसी प्रकार हूवर कमेटी जिसके आधार पर पथम एवं द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग बनाए गये। इनका सारांश को नैतिक बनाते और राज्य के विभिन्न आदर्शों को हासिल करने के लिए सिटीजन चार्टर, लोकपाल, ह्रीसल ब्लोवर एक्ट इत्यादि को जानने की अपेक्षा भी सिविल सेवा में जाने के इच्छुक अभ्यर्थियों से अपेक्षित है।